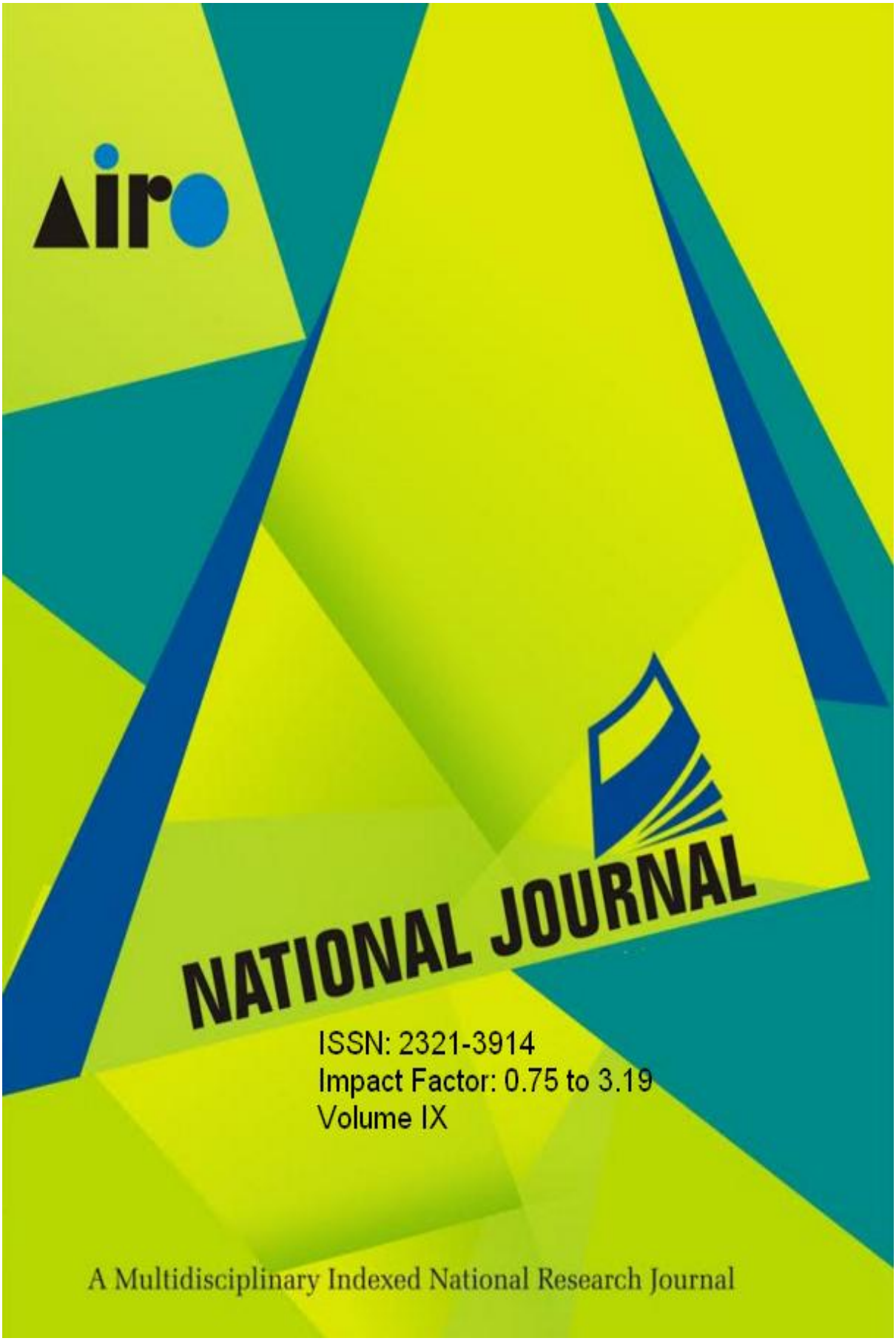
Airo
NATIONAL JOURNAL
ISSN: 2321-3914
Impact Factor: 0.75 to 3.19
Volume IX
A Multidisciplinary Indexed National Research Journal

1. Title एम.एड में चयन हेतु पूर्व परीक्षा के प्रति छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति |

2. Name Dr. Deepa Jain (PRINCIPAL)

3. College Name Tagore Shiksha Mahavidyalaya, Indore (M.P.)

Declaration of Author: I hereby declare that the content of this research paper has been truly made by me including the title of the research paper/research article, and no serial sequence of any sentence has been copied through internet or any other source except references or some unavoidable essential or technical terms. In case of finding any patent or copy right content of any source or other author in my paper/article, I shall always be responsible for further clarification or any legal issues. For sole right content of different author or different source, which was unintentionally or intentionally used in this research paper shall immediately be removed from this journal and I shall be accountable for any further legal issues, and there will be no responsibility of Journal in any matter. If anyone has some issue related to the content of this research papers copied or plagiarism content he/she may contact on my above mentioned email ID.

प्रस्तावना

"समाज में अध्यापकों का स्थान महत्वपूर्ण है। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराओं और तकनीकी कौशल का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्जवलित रखने में सहायक होता है। वस्तुतः किसी भी देश का स्तर वहां के शिक्षकों पर निर्भर करता है और शिक्षकों की योग्यता व क्षमता उनके प्रशिक्षण या शिक्षा पर निर्भर करती है। अतः सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली की धूरी अध्यापक है।"

डॉ. राधाकृष्णन

किसी भी देश की उन्नति उसके मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। मानवीय संसाधनों को गुणवत्तापूर्ण बनाने की जिम्मेदारी वहां की शिक्षा व्यवस्था पर होती है। क्योंकि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का आधार पर्यावरा**ण** शैक्षिक, सह–शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद आदि पाठ्योत्तर प्रवृत्तियों के ससंचालन पर निर्भर करता है।

शिक्षा ही वह साधन है, जिससे मनुष्य सामान्य से विशिष्ट बनता है। यह उसकी कार्यशैली, गुण एवं विशिष्ट उपलब्धियों में परिवर्तन लाती है। भारत के सन्दर्भ में शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए कोठारी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में लिखा हैं कि "शिक्षा ही एक ऐसा उपकरण है जो भारत के सामाजिक, आर्थिक–कल्याण कोष में परिवर्तन ला सकती है तथा शिक्षण प्रक्रिया एक केन्द्र के समान कक्षा–शिक्षण प्रक्रिया एक केन्द्र के

समान कक्षा–शिक्षण में चोरों तरफ घूमती है।" शिक्षा जन्म से मृत्युपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है और अध्यापक को इसी प्रक्रिया का सूत्रधार माना जाता है। अध्यापक ही बालक को परिवार के पश्चातृ प्रमुख रूप से जीवन निर्माण की दिश, व्यक्तित्व निर्माण एवं ज्ञान तथ संस्कृति, अवबोध एवं कौशल, जीवन जीने की कला, रूचि, अभिवृत्ति, संस्कार, कर्म, भक्ति एवं मोक्ष तक की अवस्थाओं का ज्ञान देने में समर्थ होता है।

ज्ञान एवं संस्कृति के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरण का कार्य शिक्षा के माध्यम से होता है। इसके परिमार्जन, परिशोधन एवं हस्तान्तरण का उत्तरादायित्व निभाने वाले व्यक्ति को ही हम शिक्षक के रूप में जानते है। आदिकाल से चली आ रही इस प्रक्रिया में न जाने कितने रूप में गुरूओं को जन्म लेना पड़ा है, न जाने कितनी प्रणालियों से गुजरते हुए शिक्षा, शिक्षक एवं ज्ञान ग्रहण करने वाले जो विद्यार्थी के रूप में जाने जाते है, ज्ञान एवं संस्कृति के साथ अपना जुड़ाव रखते हुए इसके परिमार्जन, परिशोधन एवं हस्तान्तरण के सहभागी बने है। शिक्षा की इस लगातार चलती हुई, बढ़ती हुई प्रक्रिया में शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य जो कुछ भी आदान–प्रदान, विचारों, क्रियाओं का समन्वय, विरोध एवं सुधार तथा परिवर्तन करने वाली प्रक्रिया को शिक्षण प्रक्रिया कहते है, जिसमें न सिर्फ शिक्षण वरन् शिक्षार्थी भी एक परिवर्तन का जनक बन जाता है, और शिक्षार्थी भी शिक्षक के कही आगे जाकर एक सृजन करने में स्वयं को समर्थ पाता है। शिक्षक को स्वयं को शिक्षार्थी की तरह महसूस करते हुए अपने ज्ञान, विचार एवं कार्यो का पुनः : अवलोकित करना होता है।

सनातनकाल से ही शिक्षा लक्ष्य मानव का निर्माण रहा है। मानव निर्माण का अर्थ है – मानव तथा उसके लघु संस्करण (बालक) में निहित मूलभूत गुणों का समाज समस्त दिशा में विकास जिसमें व्यक्ति का भी कल्याण हो और समाज का भी। शिक्षा के क्षेत्र में जब से मनोविज्ञान का जन्म हुआ है तब से अध्यापक शिक्षा का आधार परिवर्तित रहा है। समय परिवर्तनशील है व विकास की ओर अग्रसर है। पूर्व समय के शिक्षा के उद्देश्य, मूल्य, माध्यम व साधन आज के समय से भिन्न व विस्तृत है। आज आश्रमों व मदरसों का स्थान विद्यालयों ने ले किया है। विद्यालयों के आज अनेक कार्य है जिनके कारण शिक्षको के कार्यो में भी वृद्धि हुई है। अतः आज हम अप्रत्यक्ष शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा सफल

अध्यापकों का निर्माण नहीं कर सकते हैं। आज के समय में हमे उच्च कोटि के शिक्षित प्रतिभाशाली, योग्य, कर्मठ व अनुभवशील अध्यापकों की आवश्यकता है जिसकी पूर्ति उच्च कोटि की अध्यापक शिक्षा द्वारा ही कर सकता हैं। शायद ही यही कारण हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में अध्यापक शिक्षा संस्थान में प्रवेश के लिए अभिक्षमता और सम्प्राप्ति परीक्षण जो अध्यापन के क्षेत्र से जुड़े हों, को साक्षात्कार के साथ जरूरी माना गया ताकि उत्तम गुणवत्ता स्तर प्राप्त कर सके।

किन्तु आज भी वर्तमान समय मे ऐसे गुणों से युक्त अध्यापकों की कमी को नकारा नहीं जा सकता है लेकिन इस बात को जरूर स्वीकार किया जा सकता है कि दिन–प्रतिदिन शिक्षण–प्रशिक्षण विद्यालयों व महाविद्यालयों की संख्या व्रीव गति से बढ़ रही है अर्थात अध्यापक शिक्षण का इतना प्रचार व प्रसार होने पर भी अध्यापक शिक्षा का गुणात्मक विकास नहीं हो पा रहा है। इसी कारण एस.टी.सी. या बी.एड. महाविद्यालयों में तैयार हो रहे भावी अध्यापकों के प्राध्यापकों का चयन भी कठोर प्रक्रिया द्वारा होना आवश्यक हो गया।

हमारे देश में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान की बढ़ती संख्या एवं बी.एड. डिग्री प्राप्त अध्यापकों की बदलती मनोवृत्ति ने एम.एड. में प्रवेश हेतु प्राप्तांको की वरीयता को नकारा साबित कर दिया। अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्र आज के समय में एक सफल अध्यापक के स्थान पर सरकारी अध्यापक बनना चाहते है। इसीलिए बी.एड. कार्य मात्र डिग्री पाने हेतु करना चाहते है, वह यह कार्य मन लगाकर नहीं करते है और यदि कुछ विद्यार्थी करते भी है तो पक्षपात व आरक्षण के कारण पिछड़ जाते है। अतः बढ़ती अनियमितताओं के कारण एम.एड. प्रवेश प्रक्रिया में परिवर्तन किया गया ।

विगत वर्षो में एम.एड. में प्रवेश हेतु प्राप्तांको की वरीयता के आधार पर चयन कर लिया जाता था। किन्तु विगत वर्षो से "प्री मास्टर ऑफ एज्यूकेशन टेस्ट" परीक्षा प्रारम्भ कर दी गई। जिससे जो विद्यार्थी प्री मास्टर ऑफ एज्यूकेशन टेस्ट में उत्तीर्ण हो जाते उनका चयन किया जाता है। उसका प्रवेश निश्चित हो जाता है, इसके मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है –

- प्री.एम.एड. परीक्षा के अंको को आधार मानकर सफल अभ्यर्थियों की एक योग्यता सूची बनाना।
- योग्य प्रत्याशियों का चयन करना।
- काउन्सलिंग की तिथि तक निर्धारित पात्रता परीक्षा की मूल अंकतालिकाऐं प्रस्तुत करनें में असमर्थ होने पर अभ्यर्थी की पात्रता स्वतः निरस्त करना।
- यथा समय बी.एड. का पुनः मूल्यांकन।

पूर्व एम.एड. प्रवेश परीक्षा के बारे में महाविद्यालय परीक्षा में बैठने वाले छात्राध्यापकों का क्या मत है ? वे परीक्षा के सम्बन्ध में क्या सोचते है ? क्या अनुभव करते है ? उनका दृष्टिकोण क्या है ? सेवापूर्ण अध्यापकों से प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए इस समस्या का अध्ययन करने का निर्णय लिया गया है।

समस्या कथन –

किसी भी शोध कार्य में समस्या महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका अर्थ केवल प्रबन्ध के शीर्षक उल्लेख मात्र से नही है, बल्कि इससे अधिक सम्पूर्ण शोध कार्य का कल्पनात्मक चित्र मस्तिष्क में बन जाता है।

वर्तमान समय में क्षेत्रों में प्रवेश हेतु प्रतियोगी परीक्षाएँ आयोजित की जाती है। पूर्व प्रवेश परीक्षा द्वारा सम्बन्धित क्षेत्र में चयन होने के लिए अपेक्षित योग्यता का मूल्यांकन किया जाता है। अध्यापक शिक्षा में अधिस्नातक उपाधि के लिए पूर्व में प्रवेश परीक्षा "प्री. मास्टर ऑफ एज्यूकेशन टेस्ट" (पी.एम.ई.टी.) आयोजित की जाती है। विभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं में पी.एम.ई.टी. एक महत्वपूर्ण परीक्षा है। अतः शोधकर्ता ने अपने लघु शोध प्रबन्ध के लिए पी.एम.ई.टी. से सम्बन्धित कुछ क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया। इसके आधार पर एम.एड. पूर्व प्रवेश परीक्षा मे बैठे के छात्राध्यापकों को पी.एम.ई.टी. के प्रति अभिवृत्ति की जांच की जा सकती है।

अध्ययन के उद्देश्य –

किसी भी समस्या पर शोध कार्य करने से पूर्व शोधकर्ता को उसके उद्देश्यो को निर्धारित करना होगा तभी हम उचित लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है। उद्देश्यों के ज्ञान के

अभाव में शोधकर्ता उस नागरिक के समान है जो अपने लक्ष्य की मंजिल को नही जानता है। उद्देश्यों का स्तर, लक्ष्यों का निर्धारण कार्य को निरन्तर गति एवं गरिमा प्रदान करता है तथा अध्ययन कार्य में सफलता मिलती है।

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य है –

1. समग्र छात्राध्यापकों की एम.एड. पूर्व प्रवेश परीक्षा (पी.एम.ई.टी.) के प्रति अभिवृत्ति का पता लगाना।
2. समग्र छात्राध्यापक तथा छात्राध्यापिकाओं की एम.एड. पूर्व प्रवेश परीक्षा (पी.एम.ई.टी.) के प्रति अभिवृत्ति का पता लगना।
3. समग्र कला, विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय के छात्राध्यापकों की एम.एड.पूर्व प्रवेश परीक्षा (पी.एम.ई.टी.) के प्रति अभिवृत्ति का पता लगाना।
4. छात्राध्यापिकाओं तथा छात्राध्यापकों का एम.एड. पूर्व प्रवेश परीक्षा के निर्धारित क्षेत्रों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. विज्ञान तथा कला संकाय के छात्राध्यापकों की एम.एड. पूर्व प्रवेश परीक्षा(पी.एम.ई.टी) के सभी क्षेत्रों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय के छात्राध्यापकों की एम.एड. पूर्व प्रवेश परीक्षा (पी.एम. ई.टी) के सभी क्षेत्रों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. कला तथा वाणिज्य संकाय के छात्राध्यापकों की एम.एड. पूर्व प्रवेश परीक्षा (पी.एम.ई. टी) के सभी क्षेत्रों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. चयन प्रक्रिया में सुधार हेतु सुझाव देना।

परिकल्पना –

शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया –

1. छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं का एम.एड. प्रवेश हेतु पी.एम.ई.टी. परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. विज्ञान तथा कला संकाय के छात्राध्यापकों की पी.एम.ई.टी. के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय के छात्राध्यापकों की प्रशिक्षणार्थियों की पी.एम.ई.टी. के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. कला तथा वाणिज्य संकाय के छात्राध्यापकों की पी.एम.ई.टी. के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन की परिसीमाऐं –

अधिस्नातक स्तर पर शोध करते समय साधन व समय की कमी अनुभव की जाती है। शोधकर्ता का अध्ययन क्षेत्र काफी विस्तृत है अतः समस्या का परिसीमन करना आवश्यक है, इससे समस्या का स्पष्टीकरण भली–भांति किया जा सकता है। समस्या जितनी सीमित और स्पष्ट होगी अध्ययन कार्य भी उतनी गहनता से किया जा सकेगा। तथा साथ ही शोध कार्य की उपादेयता भी उतनी ही बढ़ेगी अतः सीमित समय व साधनों को ध्यान में रखकर निम्नांकित परिसीमाऐं निर्धारित की गई हैं –

अभिवृत्ति – अभिवृत्ति (Attitude) शब्द, लैटिन भाषा के Abtus शब्द से उत्पन्न है। इसका अर्थ है, योग्यता या सुविधा अभिवृत्ति को अनुभव किया जाता है। यह एक मानसिक दशा है जो सामाजिक व्यवहार की अभिव्यक्ति करने में विशेष भूमिका प्रस्तुत करती है। साधारणतया अभिवृत्ति किसी व्यक्ति का किसी वस्तु, व्यक्ति या अन्य विचार के बारे में सोचने, अनुभव करने या व्यवहार करने का तरीका है।

विभिन्न मनावैज्ञानिकों ने अभिवृत्ति को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है।

1- According to C.V. Good - "Attitude a readiness to react towards or against some situation, person or thing in a particular manner, for

example, with love or hate or fear or resement, to a particular degree of intensity."

2. **सीकार्ड एवं बैकमैन के अनुसार –** "अपने वातावरण के कुछ पक्षो के वृत्ति ही अभिवृत्ति कहलाती है।

3. मनावैज्ञानिक शब्दकोष में इसके विविध अर्थ दिये है –

- स्ववृत्तियों का एक स्थिर समूह।
- एक संक्षिप्त किन्तु व्यापक व समग्र व्यवहार।
- एक आने वाले अनुभव के प्रति विशिष्ट मानसिक स्ववृत्ति अथवा निश्चित प्रकार की क्रिया के लिये तत्परता की अवस्था।

सभी परिभाषाओं पर दृष्टि डालते हुए कहा जा सकता हैं कि अभिवृत्ति एक तत्परता की अवस्था है जो किसी वस्तु, व्यक्ति या विचार के प्रति एक निश्चित तरीके से काम करने को प्रेरित करती है।

समस्या का औचित्य –

किसी भी देश की उन्नति उसके मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। मानवीय संसाधनों को गुणवत्तापूर्ण बनाने की जिम्मेदारी वहां की शिक्षा व्यवस्था पर होती है। किसी भी शिक्षा व्यवस्था पर मैं अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अध्यापक को यह जानकारी होनी आवश्यक है कि शिक्षा के व्यापक उद्देश्य क्या है ? हमारे संविधान में यह स्पष्ट रूप से उल्लेखित है कि शिक्षा को किन मूल्यों व आदेर्शो के लिए कार्य करना चाहिए। संविधान की दृष्टि में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोकतांत्रिक नागरिक का निर्माण करना है। प्रो. कृष्णकुमार के शब्दों में – "यह एक ऐसे लोकतान्त्रिक व्यक्ति की कल्पना है जो किसी के सोचे हुए सच का मोहताज नही है वह अपना मार्ग खुद बना सकता है, जिसमें आत्मनिर्भरता है, बौद्धिक स्तर की भी और उपार्जन के लिए भी।"

आज भी हमारी शिक्षा व्यवस्था "औपनिवेशिक शासन" द्वारा दी गयी आधार व्यवस्था पर खड़ी है। जो हमे कक्षा शिक्षण में एक हद तक देखने को मिलता है। हमें नये शैक्षिक

सिद्वान्त बनाले होंगे जिससे हम सामाजिक न्याय और समानता के सवैधानिक मूल्यों पर आधारित एक समतामूलक और बहुलतावादी समाज के आदर्शो को प्राप्त कर सकें।

ये सिद्वान्त तब ही अपने उद्देश्यों को पा सकेगा जब इनको ईमानदारी से कार्यान्वित किया जाए। इसके लिए शिक्षक शिक्षा का नवीनीकरण अति आवश्यक है। अध्यापक ही वह माध्यम है जो सिद्धान्तों को हकीकत में बदलने का मार्गदर्शन करता है। यूँ तो सभी आयोगों ने शिक्षक–शिक्षा व प्रशिक्षण पर बल दिया है। उसमें गुणवत्ता लाने के लिए सुझाव दिये गये है। सन् 1970 के बाद से शिक्षा में गुणवत्ता का सवाल चर्चा में रहा है। लगभग सभी राज्य सरकारें प्राथमिक स्तर के लिए खुद शिक्षक तैयार करती है। बी. एड. के लिए विश्वविद्यालयों की जिम्मेदारी थी लेकिन सन् 1990 के बाद शिक्षा प्रशिक्षण की गुणवत्ता को जबरदस्त धक्का लगा। विश्वविद्यालयो ने इसे पैसा कमाने का जरिया मान लिया और पत्राचार कोर्स चलाने लगे।

फलस्वरूप कम गुणवत्ता वाले अध्यापक का प्रभावी स्कूलों में तैयार होने वाले मानवीय संसाधनों पर पड़ना लाज़मी था सो मानव संसाधन मंत्रालय ने नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एज्यूकेशन (एन.सी.टी.ई.) का प्रस्ताव तैयार किया, जिसे संसद ने दिसम्बर 1993 में पास कर दिया। एन.सी.टी.ई. ने शिक्षक प्रशिक्षण के लिए मानकों का निर्धारण किया जैसे कोर्स में कितने कार्य जरूरी है, शिक्षक–प्रशिक्षक छात्र शिक्षक का अनुपात, शिक्षक–प्रशिक्षक की योग्यता, क्या–क्या सुविधाएँ होनी जरूरी है आदि। ये मानक उन लोगे ने तैयारा किये जो शिक्षा में गुणवत्ता को जरूरी मानते थे, इनमें अध्यापक, शिक्षाविद् और विशेषज्ञ शामिल थे। इन मानकों के पश्चातृ एन.सी.टी.ई. ने 1998 में नये पाठ्यक्रमों की रूपरेखा रखी। किन्तु गुणवत्ता पर प्रश्न बना हुआ ही है। अतः आवश्यक हैं कि प्रभावशाली योग्य व समर्पित शिक्षक–प्रशिक्षक की जो आने वाले अध्यापकों को तैयार करेंगे जो स्कूलों में एक अच्छे नागरिक को तैयार होने में एक सहयोगी की भूमिका अदा करेंगे।

शिक्षा की कोई भी व्यवस्था अपनपे अध्यापकों की श्रेष्ठता से ऊपर नही उठ सकती और अध्यापकों की श्रेष्ठता उन्हें चुनने के साधन, प्रशिक्षण प्रक्रिया और उत्तरादायित्व को सुनिश्चित करने के लिए प्रयुक्त नीतियों पर निर्भर करती है।

जिन शिक्षक–प्रशिक्षकों की समाज में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका है उसका प्रशिक्षण पूर्व चिन्तन करना आवश्यक हो जाता है। इसलिए शोधकर्ता ने "एम.एड. में चयन हेतु पूर्व प्रवेश

परीक्षा के प्रति छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति" को चुना है। अनुसंधान हेतु चयन की गयी किसी भी समस्या का औचित्य परीक्षण करना आवश्यक है क्योंकि औचित्य ही समस्या की उपादेयता को सिद्ध करता है।

प्रस्तुत समस्या के सन्दर्भ को निम्न दृष्टिकोण से विचार किया जा सकता है।

a. **मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्व** – इस अध्ययन के आधार पर यह पता लगाया जा सकता हैं कि छात्राध्यापक रूचि से इस व्यवसाय में आया है या मजबूरी से। प्रवेश परीक्षा में कठिनाई तो अनुभव नहीं हुई और परीक्षण द्वारा चयन योग्यता जांचने का प्रयास किया है। अतः इस दृष्टि से अध्ययन महत्वपूर्ण हैं।

b. **व्यवसायिक दृष्टि से महत्व** – प्रत्येक व्यक्ति जीवन को सुखी एवं खुशहाल बनाने के लिए अच्छी शिक्षा एवं अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं ताकि उसकी नौकरी एवं आमदनी अच्छी हो। स्थायी रोजगार एवं स्वावनम्बन हेतु वह उच्च शिक्षा की ओर बढ़ता है। अतः चयन में संतुष्ट कारकों को खोजना आवश्यक है।

c. **शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण** – प्रस्तुत अध्ययन में आने वाली समस्याओं तथा वर्तमान चयन पद्वति के प्रति दृष्टिकोण का पता चलेगा। इससे महाविद्यालय समस्याओं को दूर करके भविष्य हेतु परीक्षण का अधिक सार्थक बनाने का प्रयास संभव होगा।

d. **सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण** – शिक्षा के माध्यम से समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। शिक्षकों को समाज का निर्माता माना जाता है जो छात्राध्यापक पूर्ण समायोजित छात्राध्यापक के रूप में तैयारी करता है तो वह स्वयं अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट हो समाज को उचित दिशा प्रदान कर सकता है। इस दृष्टि से छात्राध्यापक की क्या अभिवृत्ति है जानना आवश्यक है।

e. **अनुसंधान की दृष्टि से महत्वपूर्ण** – वर्तमान में इस अध्ययन द्वारा भविष्य के लिए एक श्रेष्ठ चयन प्रक्रिया का निर्माण एवं चुनाव की संभावना बनी रहती है। अर्थात वर्तमान चयन प्रक्रिया की कमियों को दूर करने का प्रयास संभव हो सकेगा।

विधि प्रविधि एवं उपकरण –

विधि प्रविधि एवं उपकरण अनुसंधान रूपी भवन के आधारभूत एवं महत्वपूर्ण नींव के सुदृढ़ प्रस्तर हैं जिसकी अनुपस्थिति में एक अनुसंधानकर्ता अनुसंधान रूपी

भवन का निर्माण नहीं कर सकती। किसी भी अनुसंधान में प्रयुक्त विधि एवं उपकरणों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है कोई भी अनुसंधान कार्य उसकी प्रकृति के अनुरूप विधि–प्रविधि से युक्त होकर ही अपने लक्ष्यों तक पहुंच सकता है। इसके अभाव में यह तथ्यहीन सिद्ध होगा।

1. **विधि –** "अध्ययन विधि वह मार्ग है जिस पर चलकर सत्य की खोज की जा सकती है।" यदि अनुसंधानकर्ता अपनी अध्ययन विधि की व्याख्या स्पष्ट रूप से नहीं कर सकता है तो परिणामों के अत्यधिक अविश्वसनीय और अवैध होने की संभावना रहती है। प्रस्तुत अध्ययन समूह पर आधारित है अतः सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

इस विधि के बारे में सुखिया एवं मेहरोत्रा (1984) का कहना है कि – "सर्वेक्षण विधि ऐसे अध्ययन के लिएए पयुक्त की जाती है जिसका उद्देश्य यह ज्ञात करना होता है कि वर्तमानकाल में सामान्य अथवा प्रतिनिधि स्थिति व व्यवहार क्या है।"

2. **प्रविधि –** प्रविधि के अन्तर्गत शैक्षिक अनुसंधानों में सांख्यिकीय तकनीकी का उपोग किया जायेगा। वे है –

1. प्रतिशत
2. औसत/मध्यमान
3. मानक विचलन
4. 'टी' मूल्य परीक्षण

3. **उपकरण**

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में लिंकर्ट आधारित 3 बिन्दु पर आधारित "अभिवृत्ति प्रमापनी" का निर्माण किया जायेगा। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए नवीन दत्त संकलित करने के लिए उपकरणो की आवश्यकता होती है। इन्हीं यंत्रों को उपकरण कहते हैं।

शोध परिणाम

प्रस्तुत शोा के परिणामों को दो भागो में व्यक्त किया गया है :–

अ– क्षेत्रवार मध्यमान के आधार पर

ब– तुलनात्मक विवेचन

(अ) क्षेत्रवार मध्यमान के आधार पर

1. समग्र छात्राध्यापकों की पी.एम.ई.टी. के चयन के आधार, आरक्षण विषय–वस्तु तथा उपयोगिता चारों क्षेत्रों पर अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गयी। चारों क्षेत्रों पर प्राप्त मध्यमान, कटा पोईन्ट मध्यमान से अधिक पाया गया।
2. विज्ञान छात्राध्यापकों कला वर्ग के छात्राध्यापकों की पी.एम.ई.टी. के चयन के आधार, आरक्षण, विषय–वस्तु तथा उपयोगिता के क्षेत्रों पर अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गयी।

(ब) तुलनात्मक विश्लेषण

1. समग्र छात्राध्यापकों छात्राध्यापिकाओं के मध्यमान का अन्तर सभी क्षेत्रों में सार्थक नही पाया गया। छात्राध्यापक तथा छात्राध्यापिकाओं में पी.एम.ई.टी. के सभी क्षेत्रों पर सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई है।
2. विज्ञान, कला तथा वाणिज्य संकाय के छात्राध्यापकों में पी.एम.ई.टी. के सभी क्षेत्रों के प्रति समान दृष्टिकोण पाया गया। चारों क्षेत्रों में मध्यमान अन्तर .01 स्तर पर सार्थक नहीं गया।

क्षेत्र–(1) पूर्व प्रवेश परीक्षा में चयन का आधार

1. एम.एड. में चयन के लिए पूर्व अधिस्नातक अध्यापक शिक्षा परीक्षा (पीएम.ई. टी.) उपयुक्त नहीं ऐसा 12 प्रतिशत छात्राध्यापक तथा 18 प्रतिशत छात्राध्यापिकाओं ने अपनी अभिव्यक्ति व्यक्त की है।
2. 68 प्रतिशत छात्राध्यापक तथा 64 प्रतिशत छात्राध्यापिकाओं ने इस प्रवेश परीक्षा के लिए स्नातकोत्तर स्तर पर न्यूनतम 55 प्रतिशत अंक रखना आवश्यक माना है।
3. पी.एम.ई.टी. कुशल शिक्षक प्रशिक्षकों के चयन के लिए उपयुक्त नहीं ऐसा मात्र 8 प्रतिशत छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं ने राय व्यक्त की है।

4. एक ही साथ एक ही दिन में 3 घंटे में होने वाली इस प्रवेश परीक्षा को अधिकांश छात्राध्यापकों को उचित मानते हैं।
5. अधिकांश छात्राध्यापक विषय–वस्तु का प्रवेश परीक्षा में कोई स्थान न दिये जाने पर अपना असंतोष व्यक्त करते हैं।
6. 56 प्रतिशत से 60 प्रतिशत छात्राध्यापक प्रवेश परीक्षा के बाद साक्षात्कार को स्थान देना स्वीकार करते हैं।
7. 65 प्रतिशत छात्राध्यापक अप्रेल–मई माह में प्रवेश परीक्षा का होना उपयुक्त मानते हैं।
8. बहुविकल्पीय प्रश्न को एवं ऋणात्मक अंकन को ठीक मानते है।
9. 10वीं कक्षा से स्नातक की सभी परीक्षाओं के अंकों को केरियर वेटेज देने को 50 प्रतिशत छात्राध्यापक उपयुक्त मानते हैं।

क्षेत्र–3 पूर्व प्रवेश परीक्षा की विषय वस्तु के आधार पर

1. 88 प्रतिशत छात्राध्यापक तथा 84 प्रतिशत छात्राध्यापिका स्नातक स्तर की विषयवस्तु को भी महत्वपूर्ण स्थान देने की बात स्वीकारते हैं।
2. पी.एम.ई.टी. से भावी शिक्षक प्रशिक्षकों की अभिव्यक्ति का पता नहीं चलता है, मात्र 30 प्रतिशत छायाध्यापक यह स्वीकार करते हैं।
3. शिक्षण कुशलता के क्षेत्र में सामान्य ज्ञान के प्रश्नों को भी पूछे जाना 60 प्रतिशत छात्राध्यापक स्वीकारते हैं।
4. 80 प्रतिशत छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं का मानना हैं कि पूर्व परीक्षा में सहायक समग्री निर्माण कौशल पर अनिवार्यता से प्रश्न पूछने चाहिए।
5. पी.एम.ई.टी. में 56 से 72 प्रतिशत छात्राध्यापकों का मत हैं कि भाषा ज्ञान को भी शामिल करना चाहिए।
6. पी.एम.ई.टी. की सफलता में मानसिक योग्यता के न होने से छात्राध्यापक असन्तुष्ट रहे।

7. 84 प्रतिशत छात्राध्यापक एवं 80 प्रतिशत छात्राध्यापिका भारतीय दर्शन एवं शैक्षिक सिद्वान्तों का विकास पी.एम.ई.टी. द्वारा होना स्वीकार किया है।
8. शिक्षक मनोविज्ञान अच्छे शिक्षक प्रशिक्षकों के चयन में उपयोगी होना बताया हैं।
9. विषयवस्तु पर अधिकार रखने वाले आशार्थियों की शिक्षण कुशलता क्षेत्र की जानकारी नहीं होने से चयन नहीं हो पाना स्वीकारने वाले 44 प्रतिशत छात्राध्यापिक पाये गये।
10. पी.एम.ई.टी. में शैक्षिक प्रबन्धन व शैक्षिक तकनीकी को स्थान देना उचित माना है।

क्षैत्र – 4 पूर्व प्रवेश परीक्षा की उपयोगिता –

1. पूर्व प्रवेश शिक्षा परीक्षा सही मायने में भावी शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन नही करती है ऐसा मानने वाले 60 प्रतिशत छात्राध्यापक तथा 52 प्रतिशत छात्राध्यापिकाऐं हैं।
2. पी.एम.ई.टी. मे चयनित छात्र कुशलता की कसोटी पर खरे नहीं उतरते ऐसा 40 प्रतिशत छात्राध्यापक का मानना है तथा 60 प्रतिशत छात्राध्यापक मानते है कि पी.एम.ई.टी. मूल्यांकन द्वारा उचित शिक्षण कुशलता वाले छात्रों का चयन होता है।
3. पी.एम.ई.टी. में मूल्यांकन द्वारा अध्ययन की अभिरूचि, शैक्षिक तकनीकी तथा शैक्षिक प्रबन्धन का मापन नहीं होना 40 से 60 प्रतिशत छात्राध्यापक स्वीकारते हैं।
4. अधिकांश छात्राध्यापकों का मानना हैं कि पी.एम.ई.टी. मात्र औपचारिता नहीं हैं।

शोध निष्कर्ष –

1. छात्राध्यापकों की पी.एम.ई.टी. के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन से निष्कर्ष निकलता हैं कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों की पी.एम.ई.टी. के प्रति अभिवृत्ति धनात्मक हैं।
2. पी.एम.ई.टी. के प्रति अभिवृतित छात्राध्यापकों के सेवाकाल व संकाय से प्रभावित नहीं होती हैं।
3. पी.एम.ई.टी. के प्रति अभिवृत्ति लिंग भेद से प्रभावित नहीं होती हैं।
4. पी.एम.ई.टी. परीक्षा में विषय–वस्तु को स्थान दिया जाना चाहिये।
5. पी.एम.ई.टी. में आरक्षण समाप्त किया जाना चाहिये।
6. छात्राध्यापकों का पी.एम.ई.टी. प्रवेश परीक्षा में "मेन्टल एबिलिटी" रखने के पक्ष में पाये गये।
7. पी.एम.ई.टी. में भाषा ज्ञान को शामिल किया जाना चाहिए।

भावी शोध हेतु सुझाव –

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत अनुसंधान के दौरान शोधकर्ता ने यह अनुभव किया कि इस समस्या के पहलुओं पर विस्तार के साथ अध्ययन किया जा सकता है। जिस प्रकार विज्ञान का कोई भी विद्यार्थी या अध्यापक किसी भी समस्या के समाधान को शंका की दृष्टि से देखता है उसी प्रकार कोई भी शोधकर्ता यह नही कह सकता है कि उसने उस समस्या से **सम्बन्धित सभी पहलुओं पर अच्छी तरह शोधकार्य कर लिया है।**

उपसंहार –

अपने अध्यापन कार्य का छोटे रूप में एवं समय व साधनों की सीमितता में पूर्ण करने के कारण इनके परिणामों एवं निष्कर्षो की अनुसंधान अथाह ज्ञान के भण्डार में खुलने वाला वह द्वार है जिसमें प्रवेश कर व्यक्ति स्वयं को ज्ञान से सम्पन्न करता है तथा समाज व राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान देता है। आशा की जाती हैं कि ज्ञान की यह मात्रा जो अनादि काल से चली आ रही है, उन्नत काल

तक चलती रहेगी, तथा ज्ञान का प्रकाश इसी तरह सम्पूर्ण मानवता के पथ को आलोकित करती रहेगी। प्राप्त परिणामों, उपयुक्त सुझावों एवं शैक्षित निहितार्थ के आधार पर भविष्य में होने वाले शोध कार्यो को कुछ प्रेरणा मिल सकेगी ऐस विश्वास है।

सन्दर्भ सूची

Books:

1. Agarwal, J.C. "Education Research an Introduction", New Delhi, Arya Bood Depot., 1968

2. Allport, G.W. "Attitude Hand Book of Social Psychology" Editor Carl Murchison, 1965, P.910

3. Bar, G.W.R. "Research in Education", New Delhi, Prentice Hall of Inda Pvt. Ltd., 1978

4. Borg Walter, R. "Eucational Research an Introduction, New York Langmans, Green & Co. Ltd., 1963.

5. Buch, M.B. "A Survey of Research in Education", Centre of Advanced Study in Education, Faculty of Education & Psycology, M.S.University of Baroda, India, 1974.

6. Buch, M.B. "Second Survey of Research in Education", Society for Educational Research &

Development, Baroda, India, 1979.

7. Fox, D.J. "The Research Process in Education", New York, Halt Rinehart and Winston., 1969.

8. Garret, H.C. "Statistics in Psychology & Education", New York Longmans Green Co., 1969

9. Good, Bar & Scates "Methodology of Educational Research", Newyork, Aplenty Countrary Cr. Inc., 1941

10. Hill Drath, Hole "Elements of Educational Research", New York, MCGraw Hill Books Co. Inc.

11. Meric, Johada "Research Methods in Social Relation", New York Holienefir and Winston, 1956.

12. Ruhela, S. "Teaching Profession in India, New York, (N.C.E.R.T.) Deptt. of Education, 1970.

13. Rumel, J.F. "An Introduction to Research Procedure in Education, New York, Horper & Row Publication, 1964.

14. Thurston, L.L. "Scale for Measurement of Social Attitudes", Chicago University of Chicaho Press, 1930

15. सुखिया, एस.पी. एवं महेरोत्रा "शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व चतुर्थ संस्करण आगरा विनोद पुस्तक भंण्डार, आगरा, 1984, पृ. 390

16. ढोंडियाल, एस.एन. एवं फाटक, ए.बी. "शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र" जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1982, पृ. 240

17. शर्मा, आर.ए, "शिक्षण अधिगम के नवीन परिवर्तन" मेरठ इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 1984

18. भार्गव, महेशचन्द्र "आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन" आगरा, हरप्रसाद भार्गव, 1984

19. कपिल, एच.के. "अनुसंधान विधियाँ, हरप्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा, 1981

20. गेरेट हेनरी, ई. "शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी हिन्दी अनुवाद" कल्याणी, पब्लिशर्स, लुधियाना

JOURNALS & MAHAZINES

1.	Adval, S.B.	"Aptitude for teaching an experiment in University, Shiksha, Oct., 1957.
2.	C.B.E.C.	"Validation or Procedure for selection of Teacher Training Course", Guidance Review, Vol. I, No.4, Oct, 1963.
3.	Chatarji, B.B. & Oad	"Prognostic Value of selection tests for
	L.K.	basic education", University of Rajputana Studies Education, Vol. II, 1956
4.	Dass, R.C.	"A fellow up study of pupil Teacher Selection", Journal of Education & Psychology, Vol. XVIII, No.3, Oct., 1960
5.	Goven, John C.	"Relation of the "K" scale of MMPI to teaching personality journal of edu. & research, California

		University, 1955.
6.	Pires, C.A.	"An Experiment in selection of student teachers", shiksha, July, 1952-53.
7.		Ministry of Education, Govt. of India, Report of the Educational Commission (1964-66) publishing Department, New Delhi, 1966, P.1.